आपातकाल में सृजन फुलवारी

नवनीता दुबे 'नूपुर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नवनीता दुबे 'नूपुर'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, नवनीता दुबे 'नूपुर'
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY NAVNEETA DUBEY 'NUPUR'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	वो सुबह कभी तो आएगी	6
2.	मुसीबत	7
3.	देशप्रेम	8
4.	जीवन तो सरिता की धारा	9
5.	आजकल	10
6.	सीधा-सादा	11
7.	कितनी बार	12
8.	भूली-बिसरी	13
9.	मैं समय हूँ!	14
10.	भावनाएं	15
11.	न बुहारा मन को	16
12.	आभार	17
13.	हां! ये जीवन एक संघर्ष है।	18
14.	तुम्हारी हँसी	19
15.	मैं लिखती हूं	20-21

वो सुबह कभी तो आएगी

कटेंगे उदासियों भरे दिवस,
आशाओं की किरण झिलमिलायेगी,
छटेंगे खामोशियों के बादल,
मुस्कानों की सुबह खिलखिलायेगी,
वो सुबह कभी तो आएगी...!

लड़ेंगे हम जंग ये भारी,
मिटेगी, भागेगी महामारी,
कब तक हताशाएँ,
डगर डगर डराएगी,
वो सुबह कभी तो आएगी...!

विषमताएं दूर होंगी,
समता के पुष्प होंगे पल्लवित,
पथ होंगे निष्कंटक, ज्योतित।।
महकेगी समन्वय की फुलवारी,
भारत माँ धन्य हो जायेगीं।।
वो सुबह कभी तो आएगी...!

विकास और खुशहाली का बनेगा भारत चमन,
शांति दूत बनकर चहुंओर फैलाएगा अमन,
मिटेंगी विषमताओं की लकीरें सब,
सुख की किरणें झिलमिलायेंगीं,
वो सुबह कभी तो आएगी...!

मुसीबत

सफर है
तो कुछ उतार भी चढ़ाव भी,
वक्त दे रहा,
कुछ मलहम तो घाव भी,

मुसीबतों के
पहाड़ों से टकराकर,
मंजिलों से
करेंगे निबाह भी।

धरकर धीरज का धनुष
चलता चल ओ मानुष,

आएंगे मंजिलों से पहले
कुछ अनजाने पड़ाव भी।

देशप्रेम

घर पर ही रहकर, देशप्रेम दिखाने का वक्त है।
हाथ न मिलाओ, दिल मिलाने का वक्त है।

धर्म,मजहब के सारे फसाद त्यागकर,
कोरोना को मिलकर हराने के वक्त है।
स्वच्छ रहो, औरों को भी सन्देश देते रहो,
सतर्कता बरतकर वायरस से जूझने का वक्त है।

परिजनों के संग
कुछ बिताओ घड़ियां,
कुछ नया करो काम बढ़िया,
रचनात्मकता को बढ़ाने का वक्त है।

विश्वव्यापी समस्या से न डरो,
रोज-रोज चिंता-घुटन में न मरो,
हौसलों के सहारे
जिंदगी से आंख मिलाने का वक्त है।

मानो देश के राजा की बात,
न भागो बाहर बिन कारण ओ तात!
महामारी को एकजुट होकर,
जड़ से मिटाने का वक्त है।

घरपर ही रहकर, देशप्रेम दिखाने का वक्त है!

जीवन तो सरिता की धारा

कभी पुष्पित पथ, कभी अग्निपथ,
कभी ठोकरें, तो कभी शांति लहरें,
कभी प्रफुल्लित प्राण,
तो कभी मन बेचारा।
जीवन तो सरिता की धारा,..!

जीवन मृत्यु के अनबूझे रहस्य,
इक क्षण में जग ये तहस नहस,
जब संकट समय आया
तभी प्रभु को तूने क्यों पुकारा।
जीवन तो सरिता की धारा,..!

कभी मौन प्रखर हो संगीत बिखेरे,
कभी सूने साज के सब तार छेड़े,
कहीं निष्ठुर हिय तो कहीं पिघले पत्थर,
बने हिम भी जल-फव्वारा।
जीवन तो सरिता की धारा,..!

कालचक्र में लिपटी सृष्टि समस्त,
जीवन का सूर्य,उदय-अस्त,
वेदनाएं समेटो दूजे मन की
फिर लौट चलेगा ये बंजारा।
जीवन तो सरिता की धारा,..!

आजकल

स्वार्थ में होकर चूर,
दौलत के पीछे भागते नाते-रिश्ते,
आजकल अपनापन भी पराया हो चला।
नहीं दिखती कभी कोई धूम,
ईद हो या दीवाली,
नई सभ्यता के कदमों तले दिखते सब कुचले-कुचले।
औपचारिक संवादहीन बेनाम से नाते,
शिष्टाचार की उथली नदियों सी हर नजर,
अहम के अजगर की जकड़ में सब फंसते।
संस्कारों की बस्ती तहस-नहस
पाश्चात्य के जाल में सभी दिख रहे कसते-कसते।
आजकल मन की तपन पर,
अपनेपन की नही छाया कोई,
सब अपने मे सिमटे-उलझे।
पंछी भी नहीं आते अब,
उस अमराई की डाल पर, जुगनू भी नहीं वो दिखते जलते बुझते।
सिर्फ अपना सोचते वो आजकल,
जिनके मां-बाप ने उन्हें सींचा,
खुद भूख से जीते मरते।
रूह खो गयी न जाने कहाँ,
सुकून मिलता नहीं दुनिया मे दो पल के लिये,
नाम जिंदा रहे, यही कामना मन में लिये हर आदमी,
बदहवास सा थक रहा भागते-भागते।

सीधा-सादा

आज के समय में
सीधा सादा व्यक्तित्व, कहाँ फूलता फलता है,
चालाकियों के दौर में, मासूमी से कहाँ काम चलता है।
मुखौटों को टटोलकर,
हर लम्हा जीना,
तो कभी खून के घूंट पीकर भी ठहरना पड़ता है।
जिंदगी की नाव कभी डगमगाये
तो कभी मंजिलों की ठाँव पहुंचाए।
चलते चलते कई बार,
कभी ठोकरों पर खुद ही
सम्भलना पड़ता है।
मुस्कुराकर वो, जब पीठ पे घात लगाएं,
हाथ मिलाकर जब वो, दूर झटक जाएं,
तो दोस्तों में भी दुश्मनों को
ढूंढ निकलना पड़ता है।
रिश्ते बस दो कदम के,
झुकते जो वो हो जाती, हस्ती ही सस्ती,
मनभेद हो पर मन में सभी को
सहेज कर भी चलना पड़ता है।
चार दिनों की जिंदगी,
सीधा सादा सफर हो, चाहे कांटों भरी डगर हो।
मन छलनी हो फिर भी, कभी मुस्कुराना पड़ता है।

कितनी बार

कितनी बार इस तन को छुआ,
पर क्या कभी मन तक पहुंचे तुम्हारे हाथ?
कोमल अंगों के अलावा,
कोमल मन तक भी पहुंची तुम्हारी प्यास?
क्या कभी टटोला,
शरीर की तरह ही इस आत्मा को भी?
क्या ललक
और चाह है सुकोमल मन की?
क्या कभी अहसास,
हुआ तुम्हें कि क्या है मेरी चाह?
मैं भी पंख पसारे
देखना चाहती हूं पूरा आसमां,...
अपने हिस्से का सम्मान,
औऱ अपनी आत्मा पर भी रखती हूं अभिमान....
क्या कभी तुम्हारे इन वासना से कांपते हाथों ने स्पर्श किया
समुंदर की लहरों सी उछलती मेरी आकांक्षाओं को भी?
कुछ अनुत्तरित प्रश्न....
जिनका जबाब नहीं दे पाएंगी तुम्हारी दम्भी नजरें,
जो प्रायः यही सिद्ध करना चाहतीं हैं
कि मैं पुरुष हूं, बलवान,
और तुम "स्त्री"
जो भयभीत औऱ सदैव अशक्त,
घिरी खड़ी उन जंगलों में
जो हैं बिल्कुल वीरान और भयावह....!"

भूली-बिसरी

याद आता है मुझे वो दौर
जब रहते थे सब साथ एक ही ठौर।
न कमरे छोटे पड़ते थे,
न ही मन मिलकर, बिछड़ते थे।
वो भूली बिसरी याद,..!

कितना तड़पाती है यादें,
बीती हुई सारी बातें,
जब रिश्तों में अपनापन था,
दिलों में संगम था।
वो भूली बिसरी याद,..!

अब स्वार्थ से रंगे रिश्ते,
कितने अपनत्वहीन,
दिखावे के औजार से,
कटते हो गए सस्ते रिश्ते।
वो भूली बिसरी याद,..!

अबोध बचपन के दिन की,
यादें आंखों में बस जाती है,
रातें थी कितनी खुशनुमा,
पाक शबनम की सी,
वो भूली बिसरी याद...!

मैं समय हूँ!

जो मेरे कदमों से कदम न मिलाकर चले,
जो मुझे कदमों तले कुचल दे,
उसको मटियामेट कर दूं,
उसका अस्तित्व भी मिटा दूं,
मैं समय हूँ!

जो मुझे तहसनहस करे,
जो,मेरा उपहास उड़ाए,
जो,मेरी चाल न समझे,
जो मेरी बात न माने,
उसके लिये मुश्किलें जुटा दूं,
मैं समय हूँ!

जिसकी आदतें मुझमें ढल जाएं,
जिसकी जिंदगी मुझसे, घुल मिल जाए,
उसको, ज़मीं से आसमां बना दूँ,
उसके सारे सपनों को उड़ान दूँ,
मैं समय हूँ!

भावनाएं

मन के भाव जब हों सुंदर,
सारा जग सुंदर दिखता है,
भाव के भूखे हैं इंसान
भगवान भी भावनाओं में बिकता है।

मीठे बोल दो बोल कर,
जीत लो इस जग को,
नीम चढ़े करेला को
भला पसन्द कौन करता है।

ईश्वर ने रची सृष्टि सारी,
मानव की भी मूर्ति उभारी,
हाड़ मांस का पुतला ये,
अपनी भावनाओं से ही महकता है।

मन के भाव जब हों सुंदर,
सारा जग सुंदर दिखता है।

न बुहारा मन को

मकान के जाले हटाए,
गन्दगी के ग्राफ घटाए,
चहुँओर सफाई का नजारा,
पर न बुहारा मन को।

क्रोध, उपेक्षा, लोभ ने जकड़ा,
स्वार्थ, अभिमान ने हाथ पकड़ा,
ईर्ष्या, मद की मकड़ी ने
अपना घर बनाया जीवन को।

सहयोग, सम्वेदनाएँ लुप्त हो गई,
वेदना, भी स्वार्थ चादर तान सो गई,
पुतला जलाया साल दर साल,
नष्ट किया न पर निज रावण को।

मुख धोया, चमकाई अपनी काया,
चकाचौध हुए देख धन की माया,
मन भी धो लो बस एक बार,
जैसे दमकाते हो अपने तन को।

आभार

आभार! उस परम पिता का,
जिसने प्राणों का दान दिया,
आभार! धरती माँ का भी,
जिसने जीने का अभिमान दिया।

आभार! उस सूरज का भी,
जो नित ज्योति पताका फहराता,
आभार! प्रकृति माता का भी
जिसने प्राणों को स्पंदन दिया।

आओ इस अनमोल जीवन को
परमार्थ परहित में लगाएं।
मानव बनें सही अर्थ में
जगकल्याण को धर्म बनाएं।

हां! ये जीवन एक संघर्ष है।

सांसों के आवागमन में
सृष्टि के रचनाक्रम में,
जय-पराजय में,
हौसले में, भय में,
संघर्ष ही संघर्ष है।

जीवन-मरण में
जीवन के रण में,
आस-निराश में, आम और खास में
कभी विषाद कभी हर्ष है।
संघर्ष ही संघर्ष है।

मन के ओर छोर में
कभी अपने तो कभी गैरो में,
कभी आत्म मंथन में
कभी निज-अन्तस में,
संघर्ष ही संघर्ष है।

कभी भावनाओं के महलों में,
कभी नहलों के दहलों में,
कभी हालात के उतार चढ़ाव में, कभी आत्मा के दबाव में,
संघर्ष ही संघर्ष है।

तुम्हारी हँसी

समेटती प्यास तुम्हारी हंसी
लम्हे ठहर जाते,
उदासी हार जाती,
हर तम को करती निराश,
तुम्हारी हँसी.....!

नशा सा छा जाता,
मजा सा आ जाता,
दर्द का हर कुहरा परे हट जाता,
कितना खूबसूरत अंदाज़,
तुम्हारी हँसी.....!

रग-रग में जोश भरती,
दुआओं को जिंदा करती
ठिठोली कर आंखों को भी भर देती,
इक खूबसूरत सा एहसास,
तुम्हारी हँसी.....!

ज्यों बताशे की मिठास
तुम्हारी हँसी...!

मैं लिखती हूं

पराई पीर, रोती-हंसती तस्वीर,
किसी कली की मुस्कान,
गुलाब की पंखुड़ियों की सुंदरता,
तो कभी समाज की भीरुता-गम्भीरता-
देख कर ये सब कुछ महसूस करती हूं..
हां!
मैं तब कुछ लिखती हूं!

नारी के कोमल मन की
परतों में दबी चिंगारियां,
मसली गयी नन्ही कली की
चित्कारियाँ,
सुनकर जब सहमती हूं,
हां!
तब मैं कुछ लिखती हूँ!

वो बचपन की उभरती तस्वीरें,
खिलौनों की छोटी शमशीरें,
वो बारिश की बूंदों में खिलखिलाती शरारतें, आपसी लड़ाई और
मोहब्बतें,
जब यादों के झरोखें से झांकती हैं,
हां!
तब मैं कुछ लिखती हूँ!

स्वर्गीय मां की
वो नसीहतें,
झिड़कियां,
औऱ प्यार से बालों में फेरती हुई
उंगलियों को जब याद करती हूं,
हां!
तब मैं कुछ लिखती हूँ!

भूखे, भीख मांगते
नर्मदा तट में नारियल पकड़ते बच्चे,
जो कभी शायद शाला नहीं देख पाए,
वो वृद्धाश्रम में पल रहे,
बूढ़े सिर हिलाते नजर आते,
हां!
तब मैं कुछ लिखती हूँ!

तब सुकून की सांसे ढूंढने,
मैं और ज्यादा बेचैन हो उठती हूँ,
हां!
तब मैं कुछ लिखती हूँ!
तभी शायद कुछ लिख पाती हूं!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

नवनीता दुबे 'नूपुर'

E mail- navneeta.dubey 74 @gmail.com

Mobile - 9926549605

ष्हमारा देश वर्तमान में अनेक समस्याओं से जूझ रहा है ,जिसमे से बर्तमान में सम्पूर्ण विश्व को निगलती महामारी भारत मे भी अपने पैर पसार चुकी है। फलस्वरूप माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के द्वारा सम्पूर्ण भारत बंद का आह्वान किया गया है साथ ही इस विपदा को जड़ से मिटाने सेवा में जुटे हमारे पुलिस और स्वास्थ्य विभाग एक मसीहा की भूमिका निभाने में जुटे हैं। अतः इस संकट की घड़ी में मैं देशप्रेम व करुणा पूरित भावनाओ से ओतप्रोत हो रही हूं और घर पर ही ठहरकर कुछ सृजन में रत हूँ ।अतः मेरी कुछ रचनाएं प्रेषित हैं

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-118-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/